जीवित स्वामी श्री महावीर भगवान–दियाणा

संकलन, लेखन एवं सम्पादन

मोहनलाल बोल्या

37, शांति निकेतन कॉलोनी, बेदला-बड़गांव लिंक रोड़, उदयपुर-313011 (राजस्थान)

दूरभाष : 0294-2450253, मोबाइल : 94613 84906

समर्पण : परम उपकारी गुरूदेवों को समर्पित

वर्द्धमान तपोनिधि आचार्यदेव
श्री विजय कल्याणबोधि
सूरीश्वर जी म.सा.

प्राचीन शास्त्रोद्धारक देशनादक्ष
आचार्यदेव विजय
श्री हेमचंद्र सूरीश्वर जी म.सा.

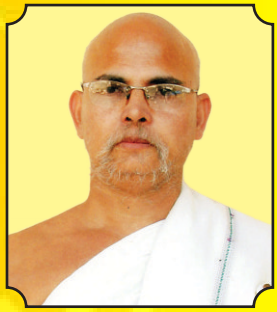

आचार्य श्री हेमचन्द्र सूरीश्वर जी
म.सा. के सुशिष्य पन्यास प्रवर
श्री अपराजित विजय जी म.सा.

आपकी प्रेरणा व उपदेशों से प्रकाशन हेतु
पूर्ण आर्थिक सहयोग मिला..
आभार...अभिवन्दन...

सिद्धहस्त लेखक
आचार्य विजय
श्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.

सिद्ध हस्त लेखक आचार्यश्री पूर्णचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.,
आचार्य श्री युगचन्द्र सूरीश्वर जी म.सा.
पन्यास प्रवर श्री मुक्तिश्रमण विजयजी म.सा.

आप द्वारा आवश्यकतानुसार संदर्भित पुस्तकें उपलब्ध करवाई गई
जिससे हमें पुस्तक लेखन कार्य में अप्रत्याशित सहयोग मिला
एतदर्थ.....आपश्री के प्रति हार्दिक कृतज्ञता.....

‘अर्हम्’ का पर्यायवाची शब्द ‘अर्हत्’ भी है

यह मंत्र समस्त धर्म का सार अपूर्व महिमावंत है। इसका गुण अथाह है, कोई पार नहीं पा सकता ।सुर नर, मुनि, योगी, इन्द्र सब इसका गुण गाते हैं और इसे ध्याते हैं। सरस्वती भी इसकी महिमा कहने में असमर्थ है। यह संसार में महाश्रेष्ठ है। सर्वऋद्धि और इच्छित फल का दातार है। सब दुखों, दुष्ट कर्मों को नष्ट करने वाला सब सुखों का भण्डार है। इसका सेवन करने वाले को कुछ भी दुष्प्राप्य या दूर नहीं है। यह आत्मा को पवित्र बनाकर निर्मल करके आत्म ज्योति को प्रकाशित करता है। यह मुक्ति का दातार है और परमात्मा बनने का सुगम मार्ग है। इससे अंसभवित भी संभवित और सहज हो जाता है। नरकादि अधम गति को तो यह निर्मूल करता है। इसलिए सर्वधर्म वाले पुरुष, स्त्री, वृद्ध, बालक, युवक सर्व प्राणीमात्र को इसका विशेषाविशेष खूब ध्यान, मनन, रटन और आराधन शुद्ध सच्चे हृदय से विनय सहित भक्ति और प्रेम से करना चाहिए।

इसमें अटल श्रद्धा रखकर नियमित से निश्चय रूप से इसकी सेवा करों। स्वच्छ होकर चिन्ता दिल से हटाकर, शरीर, मुख, वस्त्रादि से शुद्ध होकर, शुद्ध भूमि पर आसन लगा, चित स्थिर करके एकाग्र होकर (और अगर बन सके तो इसका अर्थ जो ऊपर के अक्षरों में लिखा है उसका भी लक्ष विचार करके मन में रखते हुए) अवश्य अपनी शक्ति माफिक खूब जपते–ध्याते जाओं। लाखो–करोड़ों की संख्या में जप ध्यान करो और जप ध्यान में आगे बढ़ते जाओगे ।तब इसका आनन्द स्वयं अनुभव होता जावेगा और अपूर्व महत्व व चमत्कार स्वयं मालूम होता जावेगा ।हर समय, हर वक्त इसका ही ख्याल, स्मरण, ध्यान अपने दिल के अन्दर ही अन्दर करने का महावरा करो ।इसे क्षण भर भी नहीं भूलना चाहिए ।ऊँ शांति शांति शांति

प्राचीनकाल में प्रचलित तीन पूजा का ही उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है :–

(1) श्री शांतिनाथ भगवान की (2) श्री आदिनाथ भगवान की

(3) श्री सिद्धचक्र पूजन

इनके पश्चात् भिन्न–भिन्न आचार्यों द्वारा भिन्न–भिन्न 27 प्रकार की पूजा पढ़ाने के लिए रचना की इसमें भी अधिकतर अष्ठ प्रकार की पूजा है। लेकिन अर्हत् की पूजा उदयपुर नगर में पहली बार सम्पन्न होने के समाचार सुने, इसकी संक्षिप्त में जानकारी प्रस्तुत हैजो इस प्रकार है :

(1) प्रथम तीन प्रतिमाएं स्थापित की जाती है।

(2) अन्न (धान) से पूजा की जाती है।

(3) हवन होता है।

लिखने का अभिप्राय यह है कि अन्न (गेहूँ, मूंग, उड़द आदि) से पूजा व हवन होता है।

हवन करने का अभिप्राय यह है कि जैन धर्म में हवन (अग्नि) को करना अशुभ होता है, जीव हत्या, अर्थात् हिंसा होती है जो भगवान द्वारा अहिंसा का पाठ पढ़ाया जाता है।

हवन के समय प्रस्तुत यंत्र, फोटो के सामने रखकर हवन के साथ विधिकारक द्वारा पूजा पढ़ाई जाती है। जो लगभग तीन दिन (11 बजे से 3 बजे तक) चलती है।

अधिक जानकारी के लिए साधु–सन्तों व विधिकारक से सम्पर्क करना चाहिए।

मेरा अपना मत है कि आराधना की दृष्टि से उक्त मंत्र की करनी चाहिए, इसके गुण, प्रभाव महत्व का ऊपर उल्लेख है।

प्रकाशक द्वय की कलम से

पठन, मनन, चिन्तन हेतु
विचारणीय बिन्दु
'जैन समाज चिन्तन करे।'

विश्व के प्रमुख धर्मों में जैन धर्म एक अल्पसंख्यक धर्म है लगभग 7.8 अरब की जनसंख्या वाले इस भूमण्डल में जैनों की जनसंख्या 70 लाख से अधिक नहीं है। आज से 2200 वर्ष पूर्व विश्व में 4 0 करोड़ जैन धर्म के अनुयायी निवास करते थे। आज हमारी संख्या इतनी कम कैसे हो गई है ? यह चिन्तनीय विषय है। दुर्भाग्य यह है कि एक अल्पसंख्यक धर्म होने के बाद भी यह आज अनेक सम्प्रदायों और उप सम्प्रदायों में बँटा हुआ है। दिगम्बर और श्वेताम्बर ये दो मूल शाखाएँ तो है ही, किन्तु वे भी विभाजित है। दिगम्बर परम्परा के बीस पंथ, तेरापंथ, तारण पंथ के अलावा कानजी स्वामी के अनुयायियों का नया सम्प्रदाय बन गया है।

श्वेताम्बर परम्परा में मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथी ये तीन सम्प्रदाय है। इनमें मूर्तिपूजक ओर स्थानकवासी अनेक गच्छों में विभाजित है। तेरापंथी सम्प्रदाय में भी अब नवतेरापंथ के नाम से बिखराव है। जैन धर्म के सभी सम्प्रदाय आज परस्पर बिखरे हुए है। इन्हें एक बन्धन की आवश्यकता है, जो इन बिखरी कड़ियों को एक दुसरे से जोड़ सके।

भारत जैन महामंडल व अन्य संस्थाएँ इन्हें जोड़ने का प्रयास कर रही है। जैन समाज धार्मिक दृष्टि से भी विभिन्न सम्प्रदायों में बँटा हुआ है, अपितु सामाजिक दृष्टि से अनेक जातियों और उप जातियों में विभाजित भी हैं। जिसमें अग्रवाल, खण्डेलवाल बघेर, बाल मोढ़ आदि कुछ जातियों की स्थिति तो ऐसी है कि जिनके कुछ परिवार जैन धर्म के अनुयायी है तो कुछ वैष्णव जातियों ''जैन'' में उत्तर भारत की जैन 84 तथा दक्षिण भारत की 91 जैन जातियों का उल्लेख डॉ. विलास संगवे ने किया है।

पुराने समय में इन जातियों में पारस्परिक भोजन व्यवहार सम्बन्धी कठोर प्रतिबंध है। विवाह सम्बन्धी व्यवहार पूर्णतया वर्जित था। आज खान–पान सम्बन्धी प्रतिबंध, शिथिल होने के बावजुद विवाह सम्बन्धी प्रतिबंध अभी यथावत है। आश्चर्य है कि आज भी एक जैन परिवार अपनी जाति के वैष्णव परिवार में विवाह सम्बन्ध कर लेगा। किन्तु इतर जाति के परिवार में विवाह सम्बन्ध करना उचित नहीं समझेगा। विगत दशकों में हिन्दु खटीक एवं बलाईयों के द्वारा जैन धर्म अपनाने के फलस्वरूप वीरवाल ओर

धर्मपाल नामक दो नवीन जैन जातियाँ अस्तित्व में आई है। इनके साथ भी हमारे पारस्परिक सामाजिक एकता का अभाव होने से भावनात्मक एकता में बाधक है। जब तक इन सभी जातियों में परस्पर विवाह सम्बन्ध ओर समान स्तर की सामाजिक एकात्मता स्थापित होने से भावनात्मक एकता में बाधक है। जब तक इन सभी जातियों में परस्पर विवाह सम्बन्ध और समान स्तर की सामाजिक एकात्मता स्थापित नहीं होगी तब तक भावात्मक एकता को स्थायी आधार नहीं मिलेगा।

जैन धर्म मूलतः जातिवाद एवं ऊँच–नीच का समथर्क नहीं रहा है। यह सब उस पर अन्य संस्कृति का प्रभाव है। यदि हम अन्तरात्मा से जैनत्व के हामी है तो हमें ऊँच–नीच और जातिवाद की इन विभाजक दीवारों को समाप्त करना होगा तभी भावनात्मक सामाजिक एकात का विकास हो सकेगा।

साम्प्रदायिकता का जहर

आज जैन समाज का श्रम शक्ति और धन किन्हीं रचनात्मक कार्यों में लगने के बजाय पारस्परिक संघर्षों, तीर्थों और मंदिरों के विवादों, ईर्ष्यायुक्त प्रदर्शनों आडम्बरों एवं प्रतिष्ठा की प्रतिस्पर्धा में किये जाने वाले आयोजनों में व्यय हो रहा है। यह एक अटल सत्य है कि हमने एक–एक तीर्थ और मंदिर के झगड़ों में इतना पैसा बहा दिया है और बहा रहे है कि उस धन से उसी स्थान पर दस–दस भव्य और विशाल मंदिर खडे किये जा सकते थे, अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, मक्सी, केसरियाजी, सम्मेद शिखर, गिरनार जी, जैसे अनेक तीर्थ–स्थलों पर आज भी क्या हो रहा है ? उसकी कितनी असातना कर रहे है। क्या यह उचित है कि चींटी की रक्षा करने वाला जैन समाज मनुष्यों के खुन से होली खेले ? पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से एक दुसरे के विरूद्ध जो विषमन किया जाता है, लोगों की भावनाओं को भड़काने का प्रयास क्या उचित है ? समाज के प्रबुद्ध वर्ग के लिए विचारणीय प्रश्न है।

मुनियों के चातुर्मासों में चलने वाले चौको और अन्य आडम्बर प्रतिस्पर्धी आयोजनों में जो प्रतिवर्ष अरबों रूपयों का अपव्यय हो रहा है, वह क्या धन के सदुपयोग करने वाले मितव्ययी जैन समाज के लिए हृदय विदारक नहीं है ? भव्य व गरिमामयी आयोजन बुरे नही है, किन्तु वे जब साम्प्रदायिक दुरभिनिवेश और ईर्ष्या के साथ जुड़ने पर अपनी सार्थकता खो देते हैं।

पारस्परिक प्रतिस्पर्धा में हमने एक–एक गांव में एक–एक गली में दस–दस मंदिर / उपासरे स्थानक कर दिए किन्तु उनमें आबू, देलवाड़ा, रणकपुर, जैसलमेर, खजुराहों, गोमटेश्वर जैसी भव्यता एवं कला से युक्त कितने है ? एक–एक गाँव या नगर में चार–चार धार्मिक पाठशालाएँ चल रही है, विद्यालय चल रहे हैं किन्तु सर्वसुविधा सम्पन्न

सुव्यवस्थित विशाल पुस्तकालय एवं शास्त्र भण्डार से युक्त व जैन विद्या के अध्ययन और अध्ययन हेतु तथा शोध संस्थान कितने है ? अनेक अध्ययन अध्यापन केन्द्र साम्प्रदायिक प्रतिस्पर्धा में एक ही स्थान पर खड़े कर दिय गये, किन्तु समग्र समाज के सहयोग के अभाव में कोई भी सम्यक प्रगति नहीं कर सका है।

आज जैन समाज द्वारा मंदिरों, स्थानकों, आराधनों भवनों धर्मशालाओं, भोजनशालाओं आदि के निर्माण कार्य में अथाह धन का व्यय हो रहा है, पुराने स्थलों को जीर्णोद्धार के नाम पर नया बनाया जा रहा है। आज स्थानक भवन या मंदिर तो नये बन रहे हैं परन्तु धर्म के प्रति जो दृढ श्रद्धा प्राचीन समय में थी वह आज कम होती जा रही है। पहले स्थानक तो कच्चे थे परन्तु श्रावक पक्के व हृदय धर्मी थे। अरबो रूपयों से बनने वाले धर्मस्थलों में यदि धर्म ध्यान व त्याग तपस्या में कमी हो रही है, आज बच्चों व युवाओं में धार्मिक संस्कार कम हो रहे हैं, जिसका दुष्प्रभाव हमारी जैन संस्कृति पर पड़ रहा है। दूसरे धर्मो के अनुयायियों की संख्या बढ़ रही है। परन्तु हम 40 करोड़ से कहाँ तक पहुंच गये है विचारणीय प्रश्न है। वैसे इसके पीछे अनेक कारण है।

हमें जैन जनसंख्या बढ़ाने पर विचार करना चाहिए व जनगणना के समय अपनी गणना "जैन" हेतु लिखना चाहिये न कि अन्य हमारी सही जनगणना नहीं होने से हम कम होते जा रहे है। इस हेतु जैन समाज की प्रबुद्ध संस्थाओं द्वारा पहल करना चाहिये। दूसरी ओर धन का अपव्यय करने के बजाय जनसंख्या कार्य अपनी विश्वसनीय संस्थाओं के माध्यम से करावे। एक तरफ जनसंख्या का विस्फोट हो रहा है तो दूसरी और जैनियों की संख्या कम हो रही है। आज जैन समाज की लड़कियां, अन्य जाति–समाज के लड़कों के साथ भाग कर जा रही है। जबकि हमारे समाज के पढ़े लिखे प्रतिष्ठित परिवारों को अपनी सन्तानों के लिए लड़कियों को ढूँढने में परेशानियां आ रही है। समाज को इस ओर चिन्तन–मनन करने की आवश्यकता है। जनसंख्या वृद्धि हेतु हमें कुछ प्रयास करना होगा।

1) लिंग भेद न किया जाए, लड़के–लड़की समान है।
2) गर्भपात पर पूर्ण प्रतिबंध हो।
3) जैन समाज की लड़की का विवाह अपने समाज में ही हो। दहेज प्रथा पर प्रतिबंध हो।
4) वैवाहिक समारोह जैन विधियों से व दिन में किया जाए। आडम्बर रहित हो।
5) सामूहिक भोज में समाज द्वारा आईटम की सीमा निश्चित की जावे एवं इसका पालन करना सुनिश्चित की जावे।
6) प्री–वेडिंग प्रथा पर पूर्णतया प्रतिबंध हो अन्यथा इसके दुष्परिणाम के लिए समाज याद रहे।

7) मोबाईल, इंटरनेट आदि का सदकार्यों में उपयोग हो। सामाजिक समरसता नष्ट होने से उपयोग एवं पारिवारिक विघटन से बचाव करें।

8) चातुर्मासकाल में तेरापंथ धर्मसंघ की तरह कूपन व्यवस्था चालू की जाय भले ही कुछ समय तक यह अनुचित लगेगा। परन्तु भविष्य में होने वाले अपव्यय पर प्रतिबंध लगेगा।

चातुर्मास काल में किये जाने वाले आडम्बर प्रतिष्ठा, सामूहिक भोज, गौतम प्रसादी स्नेहभोज, प्रभावना, सजावट आदि पर होने वाले अपव्ययों को रोका जाए।

हम दो, हमारे दो से आगे बढ़ा जाए, बच्चों–बच्चियों में सुसंस्कार प्रदान करने हेतु धार्मिक पाठशालाओं, धार्मिक शिविरों के आयोजन किये जाये। प्रत्येक परिवार के सदस्यों का यह नैतिक दायित्व है वे अपनी संतानों को अवश्य भेजे। ट्यूशन भेजने से भी आज धार्मिक संस्कार अति आवश्यक है।

समाज के प्रबुद्ध नागरिकों को धर्म प्रचार व प्रसार हेतु श्रमण–श्रमणियों को विदेशों में भेजा जाए ताकि जैन धर्म सम्मेलनों का आयोजन किया जाये जिसमें विश्व के विद्वानों को बुलावे। उदाहरण के तौर पर मूर्तिपूजक समुदाय के आचार्य श्री धर्मसूरि जी ने करीब 80 वर्ष पूर्व जोधपुर में 3 दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया जाए जिसमें जर्मनी के डॉ. जेकोबी और स्टीफेन्सन सम्मिलित हुए। उक्त सममेलन दो चरणों में पूर्ण हुआ और अन्त में विद्वान जेकोबी ने अपने विचार व्यक्त कर कहा कि "जैन धर्म" को आज वास्तविक रूप में समझ पाया जबकि वे जैन धर्म के विरोधी थे। उन्होंने जैन धर्म पर कई पुस्तकों की रचना की वे आज भी जर्मनी में सुरक्षित है और अध्ययन हो रहा है।

जैन समाज यदि जागरूक न रहा तो इसके विनाश को कोई भी नहीं रोक सकेगा। सभी को इसे बचाने हेतु प्रयत्नशील होना होगा।

आज समाज में हर जगह धनवानों का प्रभुत्व बढ़ रहा है भले ही वे सर्वगुण सम्पन्न हो। चरित्रवान, निष्ठावान व्यक्तियों को आगे आना चाहिए। हर जगह ट्रस्ट बनने चाहिये ताकि धन का सदुपयोग हो। जैन समाज के गरीब तबके की ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। जैन प्राकृत विश्वविद्यालय की स्थापना हो, उसमें जैन विद्वानों का समावेश किया जाए।

जैन धर्म के अनुयायियों को पहले राजा–महाराजाओं का संरक्षण था। उस समय हमारी आबादी बहुत अधिक थी, दक्षिण भारत में एक समय जनसंख्या जैन अनुयायियों की थी। परन्तु धर्मगुरूओं व अन्य संस्थाओं के द्वारा सामूहिक विरोध की वजह से जैन धर्मों काबलयो, ईस्लाम धर्म के प्रभाव से हमारी संख्या कम होती गई। उस समय की तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव जैनियों की संख्या में कमी का कारण बना। जैन धर्म

के आचार्यों के आपसी मतभेद आडम्बर व प्रदर्शन भी एक कारण रहा था।

विदेशों के पुस्तकालयों में बहुत बड़ी संख्या में जैन धर्म के दुर्लभ ग्रन्थ है जिसका विवरण लेखक की पुस्तक 'नवकार–मन्त्र–मौन साधना' में अंकित है। जैन समाज साधन सम्पन्न है, हर समाज सहायता के लिए इसकी और देखता है। हमारे विद्यालय व धार्मिक संस्थाओं, हॉस्पीटल, धर्मशालाएं, ट्रस्ट आदि है फिर भी अल्पसंख्यक घोषित होने से हम अन्य समाज की नजर में उपेक्षित हो गये। हम दान देने वाले रहे हैं, लेने वाले नही, यह समाज पर कुठाराघात है।

अच्छे साहित्य का प्रचार व प्रसार किया जावे। सामाजिक समरसता हेतु समाज में प्रयास किया जाए। जैन समाज की प्रतिभाओं का सम्मान किया जाए। आगम पुस्तकों को सरल व साधारण भाषा में सारांश प्रकाशित करें ताकि आम जन तक धर्म की जानकारी पहुँच सके।

पुण्य वर्ग का आचरण शुद्ध होगा अन्य समाज पर उसका असर होगा। अन्य धर्म के अनुयाईयों की संख्या बढ़ रहं है। जैन संस्कारों में कमी आ रही है। पूण्य वर्ग भी इस हेतु प्रयास करें व जैन धर्मावलम्बियों फैल रही साम्प्रदायिकता, सम्प्रदायवाद, गच्छवाद में सुधार हो, जैन समाज के धार्मिक आयोजन सामूहिक हो जिससे समाज की एकता प्रदर्शित हो।

मुम्बई बैंक काण्ड में सिख समाज से हम प्रेरणा ले जिन्होंने 8 घाटालेबाज सिक्खों को समाज से बहिष्कृत कर दिया है जबकि उनके पास हमारी तरह के संत–संतियो, आचार्य भगवान नहीं है।

सोचे–समझे, विचार करे।

हरकलाल पामेचा

2) प्राचीनकाल में मूर्ति पूजा का प्रचलन रहा है जिसके फलस्वरूप विश्व में कई मंदिर स्थापित थे। जैसे

(i) चीन में ही 2800 जैन मंदिर

(ii) नेपाल में सभी मंदिरों पर पशुबली होती है, केवल एक मंदिर ही ऐसा है जहाँ पशुबली नहीं होती है।

(iii) विश्व में कई देशों में खनन में जैन मंदिरों के अवशेष प्राप्त हुए है, जिसका श्रेय सम्राट अशोक के पौत्र सम्प्रति को जाता है। महाराजा सम्प्रति विश्व विजय के लिए मगध से रवाना हुए जब चीन होकर जाना चाह रहे थे तब चीन ने भय के कारण मजबूत एवं ऊँची दीवार बना दी। जिससे उन्हें रास्ता बदलकर जाना पड़ा।

(iv) पाकिस्तान के कराची शहर में जैन मंदिर था जिसे नष्ट कर दिया गया।

इसी प्रकार भारत में भी कई जैन मंदिरों को नष्ट कर दिये गये या अन्य समाज ने कब्जा कर लिया।

(v) जामा मस्जिद के स्थान पर जैन मंदिर था।

(c) कुतुबमीनार के वहां 27 जैन मंदिर थे। वे नष्ट कर दिये गये।

(v) मक्का मदिना में कई जैन मंदिर थे वे नष्ट कर दिये गये। वहां पर आदिनाथ भगवान के चरणपादुका आज भी स्थापित है।

(vi) उत्तराखण्ड में बद्रीनाथ का मन्दिर भी जैन मंदिर है। यहाँ आदिनाथ भगवान की प्रतिमा है। समाज के लिय यहां पर आज भी जैन विधि से पक्षाल किया जाता है।

(vii) जगन्नाथपुरी भी जैन मंदिर था। जिसका शिखर जैन वैष्णव शैली से बना है, संभावना यह है कि जीर्णोद्धार वैष्णव शैली से हुआ है, प्राचीनकाल में यह प्रदेश कलिंग प्रदेश के नाम से जाना गया। उत्तरी भारत में मगध के सम्राट अशोक के वंशज और कालिंग प्रदेश के महाराजा खार्वे जो दृढ़ रूप से जैनी थे। महाराजा खार्वे के द्वारा निर्मित मूर्ति जो उड़ी सके पहाड़ी खण्डगिरी पर देखी जा सकती है। वहाँ पर महाराजा खार्वे द्वारा उत्कीर्ण लेख आज भी विद्यमान है। कालिंग और मत्रधा युद्ध भुवनेश्वर के नजदीक है।

(viii) तिरूपति बालाजी का मंदिर जैन मंदिर है जहाँ नेमीनाथ भगवान की प्रतिमा है। यह प्रकरण विवाद न्यायालय में चला जिसका निर्णय भी जैन के पक्ष में रहा लेकिन जैन समाज अधिकरण करने में सफल नहीं रहा।

(ix) राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में नागदा नवाब सहाबुद्दिन ने नागदा पर आक्रमण

कर लगभग 300 मंदिर नष्ट किये जिसके अवशेष आज भी दिखाई देते हैं। इसी प्रकार नाकोड़ा में सहाबुदीन ने आक्रमण कर जैन मंदिर को नष्ट किया। लेकिन गाँवों के निवासियों ने कुछ प्रतिमाओं को पानी में डाल दिया जो आज भव्य मंदिर के रूप में प्रतिक्षित है। मुस्लिम आक्रमण के कारण पद्मावती नगर नष्ट हो गया जहाँ कई मंदिर भी थे। सिरोही नगर में भी कई मंदिर को नष्ट किया गया जिसमें एक प्रतिमा जो कलात्मक भी जिसे वे लाहौर शहर में ले गये। यह सभा चार बीकानेर के दीवान श्री करमचन्द बच्छावत जो जैनी थे वे उसे अपने सैन्यबल के साथ लौहार से वापस बीकानेर लाये। वर्तमान में यही प्रतिमा बीकानेर में भी श्री चिन्तामणी पार्श्वनाथ के नाम से प्रतिष्ठित है।

इसी प्रकार जैसलमेर क्षेत्र में कई जैन मन्दिर और जैनों की घनी आबादी थी जो मुगलों के आक्रमण में मारे गये और मंदिर–मूर्तियों को नष्ट कर दिया गया। जीवित जैनियों द्वारा कुछ प्रतिमाओं को सुरक्षित कर दिया गया, उनको स्थापित करने के लिए जैनी लोगों ने जैसलमेर के शासकों से अनुरोध कर चित्रकूट पहाड़ी को 2.25 लाख रुपयों में खरीदकर सभी प्रतिमाओं को वहां पर स्थापित कराया गया जिन्हें आज भी देखा जा सकता है। इन सभी तथ्यों का इंगित करने का अभिप्राय: यह है कि किसी भी धर्म को नष्ट करने के लिये उसकी सांस्कृतिक और साहित्य को नष्ट कर दिया जाये तो धर्म स्वत: नष्ट हो जाता है।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए ईसाई, मुस्लिम एवं अन्य धर्मावलम्बियों ने जैन साहित्य को और संस्कृति को नष्ट किया। खेद इस बात का है कि जो जैन साहित्य में सुरक्षित है उसकी ओर भी जैनियों का ध्यान नहीं जा रहा है। उदाहरण के तौर पर वर्तमान में जैसलमेर में प्राचीनकाल में हस्तलिखित शास्त्र 438 बक्सों में बंद पड़े हुए है। आवश्यकता है कि इनमें सुरक्षित साहित्य का हिन्दी अनुवाद कराया जाकर उस लिखित ज्ञान का अध्ययन कर प्रचार प्रसार कराया जावे। यह भी सत्य है कि इस साहित्य का हिन्दी अनुवाद श्री जम्बू विजय जी महाराज ने प्रारम्भ किया। उसके बाद उनके शिष्ट श्री पुण्डरिक विजय जी कर रहे हैं लेकिन एक या दो साधुओं से यह सम्भव नहीं है जिसके लिये अन्य जैन आचार्यों को सम्मिलित प्रचार करना होगा ।

लेखक का अभिमत

इतिहास के क्षेत्र में साहित्य ज्ञान को बहुत सम्मान से देखा जाता है। यही एक प्रमाणिक साहित्य होता है जो भूतकाल की सभी घटनाओं को प्रस्तुत करता है। विशेष तौर पर धर्म के क्षेत्र में महापुरूषों, पुण्यात्माओं, जिन प्रतिमाओं, जिन मंदिर आदि का विस्तृत परिचय हमको इतिहास ही कराता है लेकिन खेद है कि मेवाड़ के जैन मंदिरों के बारे में किसी महापुरूष ने विशेष कार्य नहीं किया, यदि किया भी है तो अपर्याप्त है।

लेखक द्वारा प्रकाशित पुस्तक (जिसकी सूची) अलग से लेखक के परिचय के साथ प्रस्तुत की है जिसमें यह उल्लेख किया है। शिलालेखों में कालान्तर में परिवर्तन या संशोधन की संभावना नहीं रहती है। प्रतिमा / दीवारों / स्तम्भों पर उत्कीर्ण तथ्यों को लेखक / इतिहासकार अधिक महत्व देते है क्योंकि इनकी विश्वसनीयता होती है। शिलालेख का महत्व जानते हुए भी जैन संप्रदाय के साधु सन्तों ने मंदिरों पर जो कार्य किया है वह अपर्याप्त है। भारत की संस्कृति विश्वविख्यात है भारत में जैन संस्कृति भी अति प्राचीन है। संस्कृति के साथ जैन धर्म आदिकालीन है। जहां लोग श्रद्धा से ओत–प्रोत है। श्रद्धा भारत की आत्मा है। इसी कारण भारत में स्थान स्थान पर मंदिरों का निर्माण हुआ है। अनेक ऐसे मंदिर है जो भूमिगत या खंडहर हो गये है। लेकिन उस पर अंकित शिल्प व शिलालेख आज भी अतीत की गाथा बताते है। भगवान आदिनाथ ने समाजिकरण, भगवान महावीर की अहिंसा, राम की मर्यादा, बुद्ध का मध्यम मार्ग व कृष्णा का कर्म योग राष्ट्र की आधार शिला के रूप में समाहित है। जैन धर्म का मुख्य प्रभाव स्थल भारत ही है इसी कारण भारत पवित्रतम भूमि कहलाई है। इसी भूमि पर सभी तीर्थंकर, चक्रवती, बलदेव, वासुदेव व प्रतिवासुदेव उत्पन्न हुए, जिनके प्रति श्रद्धा भाव रखते हुए तीर्थ मंदिर व शास्त्रों के निमार्ण हुए। इस जैन धर्म की संस्कृति को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पूर्व प्रकाशित पुस्तकों में जैन श्वेताम्बर मंदिरों का इतिहास, शिलालेख को लिपीबद्ध कर सुरक्षित किया गया।

जैन धर्म में कई संप्रदाय प्रचलित है जिनका अपना अपना साहित्य, कर्म की पद्धति अलग–अलग होते हुए भी सभी समाज में नवकार मंत्र और चौबीस तीर्थंकर समान रूप से है। जिसका संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत पुस्तक में समावेश किया जा रहा है। जिसका लाभ पाठकगण ले सके। प्रमुख उद्देश्य यह है कि इस भौतिक युग में किसी भी व्यक्ति को समय नहीं है। धनोपार्जन के लिये भागदौड़ करता है, भागदौड़ की स्थिति में भी अपने धर्म के तीर्थंकर / महापुरूषों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

1) नवकार मंत्र : सभी धर्मो में मंत्र का अपना–अपना महत्व होता है सभी मन्त्र प्रभावशाली होते है। केवल श्रद्धा व आराधना की आवश्यता होती है। यह सिद्ध

हो चुका है कि जैन धर्म का नवकार मन्त्र व वैदिक धर्म का गायत्री मंत्र अति प्रभावशाली है इसकी विभिन्न जानकारी लेखक की पूर्व प्रकाशित दो पुस्तकों में मंत्र की आराधना की विधि, समय व विविध भाषा में लिखित नवकार मंत्र को प्रस्तुत किया है उसका पठन पाठन करने से अधिक जानकारी मिल सकेगी। इसको समझने के लिए केवल एक उदाहरण उचित समझता है।

2) **तीर्थंकर :** चौबीसी तीर्थंकरों की जीवनी को प्रस्तुत करते हुए प्रत्येक तीर्थंकर की प्राचीनता पता लगता है तथा उनके च्वयन, जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान व निर्वाण की स्थली व तीथी का भी उल्लेख किया गया है। जिसका पाठकगण पठन, पाठन कर सके।

धर्म तर्क का, विषय नहीं है वरन समझने का विषय है प्रचलित सभी धर्मों में कोई छोटा व बड़ा नहीं होता है। किसी भी धर्म को छोटा कहने से वह मनुष्य अपने ही धर्म को छोटा बनाता है। धर्म के किसी भी आचार्य, साधु, सन्तों व महापुरूषों की आलोचना नहीं होनी चाहिए, ऐसा होने पर कई मनमुटाव, यहाँ तक की अपराध भी हो जाते हैं। जैन धर्म अति प्राचीन है, शास्त्रों के अनुसार प्राचीनकाल में जैन धर्म ही विश्व में एक मात्र प्रचलित था। धर्म जीवन के उच्चतम एवं पवित्रतम मूल्यों की साधना है इसलिए सभी धर्म को सद्भाव व समभाव की बात करना जैन धर्म का अवमूल्यन करना है। धर्म के अपने–अपने सिद्धांत है, कोई शराब, मांसाहार का उपभोग, जुआ–हिंसा को बढ़ावा देता है। लेकिन जैन धर्म में शाकाहार, अहिंसा का महत्व है। अतः सद्भाव कैसे हो सकता है।

धर्म का अर्थ है : जिसमें क्रोध, ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा का त्याग है। यह भी सत्य है कि धर्मक्षेत्र में धन और धनवान का वर्चस्व है, आज धर्म एक व्यवसाय हो गया है, इसी कारण से धर्म से युवा पीढ़ी बिखर रही है, इसलिए बुद्धिमान और अच्छे मनुष्य आगे नहीं आते और सम्मिलित होकर राष्ट्र व धर्म व समाज के सामाजिक कार्यो में भाग नहीं लेते। इसी कारण धर्म का ह्रास हो रहा है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए जैन धर्म की प्राचीनता, वास्तविकता का प्रमाणीकरण के साथ–साथ जिसमें शिलालेख आदि का समावेश किया है, सभी पुस्तकों में यहां तक मूर्तियों के चित्र जो मथुरा कंकाली टीला अन्य स्थानों से प्राप्त हुई। उनके चित्र, जैन वास्तुकला, जैन चित्रकला का आगे समावेश भी किया गया है। प्रमुख निष्कर्ष यह है कि सभी बिन्दू को वैज्ञानिक तरीके से सिद्ध किया है।

लेखक के द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में :

1) उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर व जैन धर्म के प्राचीन जैन तीर्थ में

2) श्री केशरिया जी जैन श्वेताम्बर तीर्थ
3) मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ–देलवाड़ा के जैन मंदिर
4) नवकार मन्त्र मौन साधना
5) मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग (1)
6) मेवाड के जैन भाग – 2
7) मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग (3)
8) वागड प्रदेश के जैन श्वेताम्बर तीर्थ
9) सिरोही व पाली जिले के जैन तीर्थ

इन पुस्तकों में उदयपुर नगर, देलवाड़ा (मेवाड़), उदयपुर राजसमन्द जिला, चित्तौड़गढ़–प्रतापगढ़ जिला, भीलवाड़ा जिला, डूँगरपु जिला, बांसवाड़ा जिले के प्रत्येक जैन मंदिर का इतिहास व शिलालेखों को समावेश किया गया है। इन पुस्तकों के अतिरिक्त

8) जैन धर्म का मूल आधार–आगम
9) जिन दिग्दर्शन : प्रभु आपके द्वार' पुस्तकें भी प्रकाशित हुई है।

जैन आगम में (45) आगम का संक्षिप्त में मय चित्रों के वर्णन किया है जिससे पाठकगण जैन धर्म के मूल आधार को समझ सके इसी प्रकार वृद्ध एवं अशक्त व्यक्ति, जो यात्रा नहीं कर सकते उनके लिये जिन दिग्दर्शन, प्रकाशित हुई इसमें 1000 मूलनायक की प्रतिमाओं के चित्र है। लगभग 25 प्रमुख तीर्थों का उल्लेख है जिसके दर्शन कर लाभान्वित हो सके।

सिरोही, पाली जिलों के जैन मंदिर व जिन दीघदर्शन में उल्लेखित पाठ :

णमोकार मंत्र : णमोकार मंत्र का ही महत्व मोक्ष मार्ग है, जैन बंधु कृपया ध्यान दे...विचारणीय बिन्दु

इन पाठों में मंत्रों के प्रभाव को वैज्ञानिक तरीकों से समझाया गया है जिसको रुसी वैज्ञानिक माईक्रोशिलावा ने व्यवहारिक रूप में प्रमाणित किया है, इसको इंग्लैण्ड के वैज्ञानिकों ने अनुमोदित किया है।

कालचक्र के रूप में जैन धर्म में प्रचलित अवसर्पिणीकाल का व उत्सर्पिणकाल में कुल बारह आरे बताये गये है जिसमें हमारे पूर्वज के निवास स्थान उनकी ऊँचाई, का भी वर्णन है। जो आज के युग में सही नहीं माना जाता है। लेकिन शास्त्रों में जो लिखा गया है वह शत–प्रतिशत सही है जिसका प्रमाणीकरण लेखक ने वैज्ञानिकों व धर्मशास्त्र, समाजशास्त्री का नाम लेते हुए उल्लेखित पुस्तक में की है तथा जापान के पहाड़ियों पर प्राप्त मुर्तियों, चन्द्रयान, मंगलयान का वर्णन करते हुए यह सिद्ध हुआ है जो शास्त्रों में लिखा हुआ है वह सत्य पर आधारित है। पाठकगण को चाहिये कि वे उसको समझने का प्रयास करे। लेखक द्वारा लिखित सभी पुस्तकों में जैन आचार्यों, साधु–साध्वी भगवन्तों ने प्रेरणा व सहयोग प्रदान किया है उसके लिए नमन है।

इन सभी कार्यों में सहयोग, धर्मप्रेमी, इतिहासकार, स्वाध्यायी, सत्यनिष्ठ, कर्मयोगी व संशोधक श्री हरकलाल जी पामेचा, निवासी देलवाड़ा ने किया। श्री दलपतसिंह पुत्र श्री नंदलाल जी दोशी, उदयपुर का निरन्तर सहयोग रहा। उसके लिये हृदय से आभार, परिवार में विशेष रूप से धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला, पुत्री श्रीमती नीरू लोढा का भी सहयोग रहा है। इसके अलावा लेखक के भाई–बहन, पुत्रियां, दौहित्रा, दौहित्रियों का भी आभार।

हमेशा की तरह ही मेरी कई पुस्तकों की सुन्दर डिजाईनिंग हेतु 'मल्टी वेव ग्राफिक्स' के श्री प्रवीण जी दक का भी आभार जो कि लम्बे समय से हमसे जुड़े हुए हैं।

इस पुनित कार्य में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से जिसने भी सहयोग किया, उनका भी आभार ।

जीवन का सार :

जीवन के अस्सी बसन्त या पतझड़ पार करने के उपरान्त मनुष्य का मन जीवन की अनेक विभिषिकाओं का स्मरण करने में लगता है। तब उसे मन को एकमात्र सांत्वना देने का सम्बल एक ही दिखाई देता है। वह है अपने द्वारा किये गये अच्छे या बुरे कार्यो का स्मरण । सामान्यतया अति, जरूरतमंद, बुद्धिमान तथा जिज्ञासु जिन्होंने कुछ पुण्य कार्य किये हैं वे भगवान की पूजा करते हैं । अन्य लोग जो दुष्कर्म स` ही फूलते–फलते हैं चाहे किसी भी स्तर के हो, माया द्वारा भ्रमित होने पर भगवान के पास फटकते भी नहीं हैं उनके लिए सांसारिक सम्पदा, सुख वैभव या इन्द्रियों का शमन का ही सर्वोपरी होता है।

जिसने भगवान के चरणों में शरण ले ली है, अविद्या के सागर को पार कर लिया है उसे मन्थर गति से चलती नाव भी निरन्तर सम्बल देती रहती है। चाहे जीवन में कितनी भी विपत्तियां आयें, आश्रय छुट जायें, अपने पराये हो जायें फिर भी वह निरन्तर मन्थर गति से आगे बढ़ता ही रहता है। यही जीवन का सार है।

पुनश्च :

सभी तीर्थंकर भगवान की जीवनी का लेखन, संकलन एवं प्रकाशन लेखक ने 'महासभा दर्शन' में कराया गया था, जिसे श्री हरकलाल जी पामेचा सा. द्वारा संशोधन करने के बाद यहां प्रस्तुत किया गया है, जिसके लिए आभार ।

निष्कर्ष के रूप में, जैन धर्म पूर्णतया वैज्ञानिक है।

सद्भावी

(मोहनलाल बोल्या)

प्रकाशक–सम्पादक

लेखक परिचय

नाम	–	मोहनलाल बोल्या
माता	–	स्व. श्रीमती गुलाबकुंवर बोल्या
पिता	–	स्व. श्री रोशनलाल जी बोल्या
जन्म स्थल	–	उदयपुर
जन्म दिनांक	–	15 जून, 1936
शिक्षा	–	बी.कॉम, एम.ए. (समाजशास्त्र)
पत्नी	–	स्व. श्रीमती बसंत बोल्या एवं श्रीमती सुशीला बोल्या
धर्म	–	जैन धर्म, मूर्तिपूजक समाज
व्यवसाय	–	सेवानिवृत जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी

प्रकाशित, संपादित पुस्तकों की सूची :

- उदयपुर नगर के जैन श्वेताम्बर मंदिर एवं मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ
- मेवाड़ के प्राचीन जैन तीर्थ – देलवाड़ा के जैन मंदिर
- श्री जैन श्वेताम्बर तीर्थ – केशरिया जी
- नवकार मंत्र स्मारिका
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 1
- नमोकार मंत्र – महामंत्र (मौन साधना, मंत्र)
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 2
- मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग – 3
- वागड़ प्रदेश के जैन श्वेतामबर मंदिर
- सिरोही एवं पाली जिले के जैन श्वेताम्बर मंदिर
- जैन धर्म का मूल आधार 'आगम'
- महासभा दर्शन (मासिक पत्रिका) (जनवरी, 2011 से जनवरी, 2016 तक)
- जिन दिग्दर्शन
- जैन धर्म के 24 तीर्थंकर

संस्थागत कार्य :

- कार्यकारिणी सदस्य : श्री जैन श्वेताम्बर महासभा, उदयपुर
- संयोजक – ज्ञान खाता
- श्री जैन श्वेताम्बर चतराम का उपासरा, उदयपुर

भावनात्मक विश्लेषण

लेखन एवं संशोधक

सरस्वती कृपा पात्र, जिन शासन प्रेमी, सुश्रावक रत्न

श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या साहब, उदयपुर

सादर प्रणाम

जैन दर्शन का उदगम देव तत्व से है। हमारे नमस्कार मंत्र के प्रथम दो पद अरिहंत एवं सिद्ध देव पद के अंतर्गत है। इसमें सिद्ध प्रभु तो समस्त कार्य सिद्ध करके सिद्ध अवस्था में विराजमान है। अरिहंत यानी तीर्थंकर प्रभु यद्यपि भरत–ऐरावत क्षेत्र की अपेक्षा अभी हमारे यहाँ विद्यमान नहीं है फिर भी उनके द्वारा वपन की गई। जिनवाणी का बीज परम्परा से प्रवाहित होता हुआ हमारे तक पहुँचा है। अतः हमारे लिए वे महापुरूष धर्म के आद्य प्ररूपक, उपदेशक एवं मार्गदर्शक है। उन महापुरूषों द्वारा प्ररूपित धर्म का अनुसरण करके भूतकाल में अनंत जीव अपना आत्मकल्याण कर गये, वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र की अपेक्षा अनेक जीव, आत्म कल्याण कर रहे है एवं भरत ऐरावत की अपेक्षा कई जीव आत्म उत्थान की ओर अग्रसर है। भविष्य में भी इसी मार्ग का अनुसरण करके अनंत जीव अपना आत्म कल्याण करेंगे। ऐसे परोपकारी तीर्थंकार भगवंतों के उत्थान का क्रम, पूर्व भवों का वर्णन, तीर्थंकर नामकर्म का उपार्जन, तीर्थंकर भव के चारित्र पालन एवं उनके द्वारा उपदेशित वाणी आदि को जानने की जिज्ञासा प्रत्येक धर्मानुरागी उपासक की रहती है।

वर्तमान अवसर्पिणी काल में हुए 24 तीर्थंकर भगवंतों का व्यवस्थित जीवन चरित्र" संक्षिप्त में बताने का प्रयास सुश्रावक श्री बोल्या जी ने अपनी नवीनतम पुस्तक में संकलित कर देने का सुप्रयास किया है। आज के इस व्यस्तम समय में बड़े–बड़े ग्रन्थों को पढ़ने का समय किसी के पास नहीं है। हर व्यक्ति की यह इच्छा रहती है कि कम से कम समय में तीर्थंकर भगवंतों के बारे में अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त कर अपने ज्ञान में वृद्धि कर समय का सदुपयोग कर सके। ऐसे ही व्यस्त धर्मप्रेमी बंधुओं के लिए श्रीमान् बोल्या साहब ने अपनी पूर्व

प्रकाशित "महासभा दर्शन" पत्रिका में से संक्षिप्त चयन कर पुस्तका कार रूप में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। आप इस बहुमूल्य रचना कार्य के लिए बधाई के पात्र है।

मेरा श्रीमान् मोहनलाल जी बोल्या साहब से परिचय 2005 में जब आप देलवाड़ा के जैन मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य हेतु मेरे गाँव में पधारे थे। आप अकेले ही जैन मंदिरों में जाकर जैन प्रतिमाओं एवं मंदिर से सम्बन्धित जानकारी का संकलन कर रहे थे। मैं स्वयं भी इतिहास प्रेमी होने के नाते एवं मंदिरों के इतिहास के प्रति रूचि होने की वजह से आपके कार्य में सहयोग करने हेतु जुड़ गया। करीबन 3 माह तक आपके साथ कार्य करने से मेरी ज्ञान पिपासा भी बढ़ी। आपने उदयपुर शहर के 56 मंदिरों पर प्रकाशित पुस्तक मेरे को भेंट की। उस पुस्तक को देखकर मैंने आपसे निवेदन किया कि क्या ऐसी सुन्दर पुस्तक आप "देलवाड़ा" यानि देव कुलपाटक के प्राचीन मंदिरों पर भी प्रकाशित करने का विचार रखते है। आपने कहा कि इसी उद्देश्य से तो अपन मंदिरों के सर्वेक्षण के कार्य में लगे हुए है। आखिर आपके व मेरे प्रयास से देलवाड़ा जैन सोसायटी, उदयपुर ने इस पुस्तक को प्रकाशित कर समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया। यह मेरा भी अहोभाग्य था कि आपकी इस योजना में मेरा भी कुछ योगदान रहा। संकलन एवं सर्वे का यह कार्य कठिनाई से भरा हुआ था। विपरीत परिस्थिति में भी समय निकालकर शिलालेखों को पढ़ना, प्रतिमाओं को स्पर्श कर लम्बाई, चौड़ाई व ऊँचाई का मापन, फोटोग्राफी, प्राचीनता का पता लगाना, इतिहास संकलन आदि का कार्य सरल नहीं था। श्रीमान् बोल्या साहब ने इसे प्रभु सेवा का कार्य समझकर सम्पन्न किया। देलवाड़ा जैन सोसायटी उदयपुर द्वारा रोटरी क्लब, उदयपुर में 14 जनवरी (मकर सक्रांति) 2007 को इस पुस्तक का विमोचन सदस्यों की उपस्थिति में भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ। श्रीमान् बोल्या साहब से 2005 का परिचय आगे बढ़ते–बढ़ते कई अन्य पुस्तकों के प्रकाशन का माध्यम बना। श्रीमान् बोल्या साहब का जैन सोसायटी द्वारा अभिनन्दन व बहुमान किया गया।

उसके पश्चात् आपने उदयपुर व राजसमन्द जिले के जैन मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ किया। उसमें भी करीबन 2 वर्ष का कठिन परिश्रम हुआ। प्रभु कृपा एवं गुरूजनों की प्रेरणा से यह कार्य भी सम्पन्न हुआ। इस कार्य में मेरा

सहयोग केवल मात्र आवश्यक सूचना से ही सम्बन्धित रहा था। दिसम्बर, 2008 में मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग I का विमोचन हिरण मगरी, सेक्टर 3 उदयपुर में आचार्य श्री निपूणरत्न सूरीजी म.सा. की नेश्राय में भक्तजनों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। इस पुस्तक की सभी आचार्य भगवन्तों व संतों ने भूरी–भूरी प्रशंसा की व इस पुनित कार्य के लिए श्रीमान् बोल्या साहब का अभिनन्दन व बहुमान समाज के प्रतिष्ठित महानुभावों ने गुरू भगवंतों की उपस्थिति में किया गया। जबकि आप मान–सम्मान व प्रतिष्ठा के कार्य से अपने आपको दूर रखना पसन्द करते हैं।

इसके पूर्व नवकार मंत्र स्मारिका का प्रकाशन कर चुके थे। भाग–1 के प्रकाशन के बाद भी आपने विश्राम लेना उचित नहीं समझा। यद्यपि वृद्धावस्था व नैत्र की ज्योति कमजोर होने के बाद भी आपने नमोकार मंत्र महामंत्र (मौन साधना मंत्र) प्रकाशित कर एक अदभुत अनुकृति जैन समाज को प्रस्तुत की। यह एक दुर्लभ ग्रन्थ है। सभी भाषाओं में नवकार महामंत्र कैसे लिखा जाता है इसका चमत्कार एवं सभी सम्प्रदायों में इसके महत्व का दिग्दर्शन आपने कराया है। जैन श्वेताम्बर तीर्थ केशरिया जी पर भी आपकी कलम चली एवं देश के इस महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल की जानकारी भी आपने अपने अन्दाज में प्रस्तुत की।

आदमी यदि बुढ़ापे में भी कार्य करता रहता है तो देवीय संयोग से वह अस्वस्थ नहीं रहता है व उम्र भी बढ़ती जाती है। आप हार्ट पेशेन्ट होने पर भी अपना कार्य अपने निर्धारित लक्ष्य के अनुसार गुरू भगवंतों की असीम अनुकम्पा से कर रहे हैं । आपने अपने जीवन का लक्ष्य ही सेवा को बना दिया है। जिन शासन की महती सेवा के कार्य में आपको देवीय शक्ति से थकान का अनुभव भी नहीं होता है। अभी तो बहुत कार्य करना है।

यह यात्रा अनवरत जारी रही। 2009 से 2011 तक चित्तौड़गढ़–प्रतापगढ़ जिलों के मंदिरों का सर्वेक्षण कार्य अनवरत चलता रहा। ये दोनों जिले बहुत बड़े है। कहीं तो मध्यप्रदेश सीमा को पारकर जाना पड़ता था। प्रतिदिन औसतन 5–6 मंदिरों का सर्वेक्षण का कार्य सम्पन्न होता था। प्रतिमाओं के शिलालेख व प्राचीनता की जानकारी करना हमारा मुख्य उद्देश्य था। चित्तौड़गढ़–प्रतापगढ़ आदि मुख्य विश्राम स्थल रहते थे। हम प्रातः 8.00 बजे से सायं 9.00 बजे तक

अपना कार्य करते रहते थे। दोनों समय भोजन किया हो यह याद नहीं आता है। सुबह नाश्ता करके निकलते तो भोजन सायंकाल का नसीब होता था। भूखे रहकर गाँवों, नगरों व शहरों के मंदिरों से सम्बन्धित जानकारी संग्रह करना जहां रात हो जाए विश्राम करना, कठिनाईयों को सहन करके भी इस देवीय कार्य को सम्पन्न कर इसे पुस्तकाकार रूप में देशवासियों को प्रस्तुत करना ही हमारा मुख्य उद्देश्य था। एक तरफ भोपालसागर दुसरी ओर रावतभाटा। उधर छोटीसादड़ी तो दूसरी तरफ दलोट, निनोर आदि गांव–नगर तक भ्रमण का कार्यक्रम बहुत ही रोमांचकारी था। सन् 2011–12 में हमारी पुस्तक 'मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–2' का प्रकाशन हो गया। इसमें फोटोग्राफ हमें श्री राजेन्द्र जी से उपलब्ध हो गये। सभी जगह धर्मप्रेमी बंधुओं का अच्छा सहयोग रहा।

उदयपुर, देलवाड़ा, उदयपुर–राजसमन्द, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ क्षेत्र के जैन मंदिरों का कार्य सम्पन्न होने के पश्चात् श्रीमान् बोल्या साहब के मन में विचार आया कि अब हमें यह कार्य यही पर समाप्त कर देना है। मगर पूना प्रवास में गुरू भगवंतों के निर्देशननुसार हमें भीलवाड़ा जिले व रणकपुर के जैन मंदिरों का कार्य करने हेतु सहमति देनी पड़ी, 100 कि.मी. कार से चलने के पश्चात् भीलवाड़ा जिले की सीमा प्रारम्भ होती है। उसके बाद गंगापुर तहसील के गांव पोटला से हम सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ करते थे। सबसे कठिन विकट परिस्थितियों में हमें भीलवाड़ा जिलें के मंदिरों का कार्य करना पड़ा। कहीं सकारात्मक सहयोग मिला तो कही नकारात्मकता की भावना भी थी।

2 वर्ष की अनवरत यात्रा के पश्चात् इस जिले का व रणकपुर के जैन मंदिरों का कार्य सम्पन्न हुआ। प्रकाशन कार्य प्रारम्भ होने के पूर्व श्रीमान् बोल्या साहब के स्वास्थ्य में भी गिरावट के संकेत मिलने लगे। आपका यह कथन आज भी याद आता है कि ''कठिन परिश्रम से यह कार्य हम दोनों ने सम्पन्न किया है, यदि मैं रहूं या न रहू आपको इसका प्रकाशन करवाना है।'' प्रभु की कृपा से आप स्वस्थ भी हो गये व यह पुस्तक "मेवाड़ के जैन तीर्थ भाग–3" (2012) भी प्रकाशित हो गई। इसके साथ ही मेवाड़ संभाग के सभी जिलों के मंदिरों के इतिहास शिल्प, स्थापत्य प्रकाशित करने का कार्य सम्पन्न हो गया एवं हमने राहत की साँस ली कि हम हम अपने कार्य से निवृत हो गये। श्री महेश जी दवे का फोटोग्राफी कार्य में बहुत सहयोग रहा, धन्यवाद।

व्यक्ति क्या सोचता है ? प्रभु की इच्छा क्या होती है ? कुछ कह नहीं सकते हैं। अब वागड़ प्रांत के जैन मंदिर हमारा इंतजार कर रहे थे। दोनों जिलों में मंदिरों की संख्या केवल 36 है, 15 दिन में हमारा सर्वे का कार्य सम्पन्न हुआ। यहां के मंदिरों की व्यवस्था पूजा पाठ आदि बहुत ही व्यवस्थित लगे। सब जगह से हमें अच्छा सहयोग मिला। वागड़ के जैन मंदिरों की पुस्तक भी नई साज–सज्जा के साथ बहुत ही आकर्षक बन गई। सभी ने मुक्त कंठ से इसके नये कलेवर की प्रशंसा की। यह हमारा सबसे सुन्दर व प्रभावशाली कार्य रहा। वागड़ के जैन मंदिरों के साथ ही मेवाड़ संभाग के सभी जिलों का कार्य सम्पन्न हो गया था। अब तो ऐसा लगता था कि हमारा कार्य अब पुरा हो चुका है, आपकी नैत्र ज्योति भी बहुत कमजोर हो गई थी। समाचार पत्र पढ़ना भी बन्द हो गया और भी अनेक बीमारियां, वृद्धावस्था की वजह से परेशान करने लगी।

लेकिन अचानक आप सिरोही जिले के एक गांव मूंगथला के मंदिरों के दर्शनार्थ पधारे थे। वहां के भव्य व प्राचीन ऐतिहासिक मंदिर के दर्शन करते समय देवीय शक्ति की प्रेरणा से आपके मन में यह विचार आया कि मुझे अब सिरोही जिले के जैन मंदिरों पर भी कार्य करना चाहिये। इस बार आपका विचार था कि हम केवल मंदिर व मुख्य प्रतिमा का फोटो ही लेंगे व साथ में प्राचीनता बाबत् जानकारी प्राप्त करेंगे। सिरोही पाली जिले के मंदिरों की संख्या करीबन 400 है। करीबन 2 वर्ष के कठिन परिश्रम से हमने यह कार्य 2016 में समाप्त कर लियाा। अब तक 1000 से अधिक प्रतिमाओं व मंदिरों के दर्शन व सामग्री का चयन भी कर चुके थे। यहां पर हमें अच्छा सहयोग मिला। बड़े मंदिरों की फोटोग्राफी हेतु मना कर दिया गया खासकर मुख्य प्रतिमा जी के फोटो हम नहीं ले सके। 2 वर्ष की मेहनत से सिरोही व पाली जिले के मंदिरों की करीबन 500 पृष्ठों की आकर्षक पुस्तक का प्रकाशन का कार्य भी गुरू भगवन्तों एवं धर्मप्रेमी संस्थाओं व बंधुओं के सहयोग से ही सम्पन्न हो सका। अब तक प्रकाशित सभी पुस्तकों में से यह सबसे भव्य व आकर्षक थी। मंदिरों के सर्वेक्षण का कार्य सम्पन्न हो जाने के पश्चात् हमने राहत की साँस ली।

मंदिरों का कार्य सम्पन्न होने पर आपके मन में यह विचार आया कि जैन आगमों पर प्रकाशित साहित्य बहुत ही विस्तृत है। सभी धर्म प्रेमी बंधुओं द्वारा उसका वाचन करना एवं समझना कठिन है। यह विचार आया कि एक ऐसी

संक्षिप्त पुस्तक का प्रकाशन किया जाए जिसमें सभी आगमों से सम्बन्धित जानकारी का सारांश मय चित्रों के मिल सके। आपने आगमों का अध्ययन कर उसमें से संक्षिप्त सार रूप सामग्री का संकलन किया एवं "जैन आगम" पुस्तक का प्रकाशन किया। आचारांग, दशवेकालिक अन्तगड़दशा सूत्र व उतराध्यनन सूत्र जैसे प्रमुख आगमों का वर्णन विस्तार से किया। इसमें जैनों की वर्तमान स्थिति व जनसंख्या बाबत भी अपने विचार व्यक्त किये। इसके साथ ही श्री कर्माशाह दोषी एवं उनके परिवार के योगदान का सुन्दर प्रस्तुतीकरण भी समाज के सामने रखा है। आगमों पर संक्षेप में सुन्दर व बहुउपयोगी पुस्तक का प्रकाशन कर आपने समाज की बहुत बड़ी सेवा की है।

अब आगे मुझे कुछ भी कार्य नहीं करना है परन्तु मन में उठे हुए विचारों को विश्राम देना कठिन है भले ही आँखो से दिखता नहीं, हृदय कमजोर हो गया, अन्य बीमारी या परेशान करती हो पर मन मानता ही नहीं है। मन में विचार आया कि ऐसे महानुभाव जो वयोवृद्ध हो चुके है, आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं, तीर्थयात्रा की भावना भी है, शरीर से चलने फिरने में भी असमर्थ हो चुके है, के लिए भी ऐसी पुस्तक का प्रकाशन किया जाए जिससे वे घर बैठे ही तीर्थस्थलों एवं जिन प्रतिमाओं के भाव दर्शन का लभ ले सके इन्हीं महानुभावों की सेवा में "जिन–दिग्दर्शन" नामक पुस्तक का प्रकाशन 2019 में आपने किया है। 1000 से अधिक प्रतिमाओं के दर्शन व देश के प्रमुख जैन तीर्थस्थलों का वर्णन किया है साथ ही नवकार महामंत्र का महत्व, जैन बन्धुओं के लिए विचारणीय बिन्दु व नवपद ओली पर भी आपकी कलम चली है।

आपने समाज को यह अमूल्य धरोहर प्रदान कर जिनशासन की महती सेवा का लाभ उठाया है, प्रभु आपको शाश्वत सुख प्रदान कर मुक्ति के मार्ग की ओर अग्रसर करे। मेरा भी आंशिक सहयोग रहा है। यह मैं देवीय कृपा मानता हूँ। आपका जीवन ऐसे शुभ कार्यों के प्रति समर्पित है। अब आपका चिन्तन आगे बढ़ा है व आपके सम्मुख तीर्थकर भगवंतों का संक्षिप्त जीवन परिचय प्रस्तुत हो रहा है। हम सभी इसका लाभ उठावेंगे। तब ही आपको असाध्य परिश्रम गौरवान्वित होगा।

अंत में सभी धर्म प्रेमी बंधुओं से यह निवेदन है कि आप द्वारा दिये गए जनोपयोगी सुझावों का लाभ उठावें। प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित रखें, महामंत्र

नवकार पर पुस्तक का अवश्य ही अवलोकन करें क्योंकि इसमें सभी सम्प्रदायों के हित को मद्देनजर रखते हुए लेखक की लेखनी चली है। घर बैठे तीर्थयात्रा का आनन्द लें व भगवान का जीवन चरित्र कम समय में पढ़कर जानकारी लें।

एक बार पुनः श्रीमान् बोल्या साहब का उनके उत्कृष्ठ लेखन, संपादन एवं संकलन हेतु आभार। परिवार के सभी सदस्यों का भी आभार प्रस्तुत करना आवश्यक समझता हूँ, क्योंकि उनके सहयोग के बिना यह कार्य करना संभव नहीं हो सकता। आभार प्रदर्शित करता हूँ मेरी धर्म सहायिका श्रीमती प्रेम पामेचा सुपुत्र दिनेश, परमेश, पुत्र वधु श्रीमती अर्चना, श्रीमती सीमा, दामाद श्री महेन्द्रजी पोखरना, सुपुत्री श्रीमती पंकज पोखरना, सुपौत्र शुभम, मनन, सुपौत्रीयाँ प्रियल, आर्ची, हनी एवं दौहित्र श्री प्रांजल के प्रति आभार।

अपना कार्य समर्पित करता हूँ, अपने प्रिय दिवगंत सुपौत्र श्री ऋषभ पामेचा को, जिसकी मंद मुस्कान आज भी मेरी प्रेरणा की स्त्रोत है।

इस कार्य में जिन–जिन बंधुओं एवं संस्थाओं ने सहयोग प्रदान किया उन सभी का हृदय की असिम आस्था के साथ आभार। आशा है कि भविष्य में भी आप सभी का सहयोग प्राप्त होता रहेगा ।

आपके मंगलमय एवं दीर्घायु जीवन की कामना।

आपका अनुज

हरकलाल पामेचा

देलवाड़ा, जिला राजसमन्द

मोबाइल : 94685 79070

नियाणा तीर्थ

श्री महावीर भगवान का विहार क्षेत्र, आबू पर्वत के क्षेत्र में रहा है जिसमें मुख्यतया चिश्चतागढ़, मूंगथला, नाणा, निठाराणा, नांदिया बावन बड़जी आदि क्षेत्र रहा है। जहां-जहां महावीर भगवान का विश्राम रहा है ।वहां पर भगवान के बड़े भ्राता श्री नद्धिवर्धन ने भगवान के जीवनकाल में मंदिर निर्मित करवाकर प्रतिमा प्रतिष्ठा कराई। भगवान महावीर के अधिकतर उपसर्ग इसी क्षेत्र में आये है।

जैसे कान में कीलें लगाना, पांव में खीर पकाना, चन्डकोशिया नाग की रचना आदि वर्तमान में भी इतना सुन्दर व घना जंगल है वो 2500 वर्ष पूर्व कितना घना जंगल तीर्थ रहा होगा। यह तीर्थ सिरोही रोड स्टेशन से आबू रोड जाने वाली सड़क के मध्य स्वरूपगंज रेल्वे स्टेशन व बस स्टेशन आता है वहां से 17 किलोमीटर दूर स्थित है। ये तीर्थ भी उन्हीं तीर्थों (उपरोक्त) तीर्थों में से एक है, मंदिर के बाहर घना जंगल शान्त वातावरण सुन्दर एवं रमणिक स्थल है। इसको देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि हम किसी पहाड़ी स्थल पर आये है। मंदिर में प्रवेश होने पर बहुत बड़ा दरवाजा है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी महल में प्रवेश कर रहे है। मंदिर में प्रवेश करते समय जब भगवान के दर्शन करते ही ऐसा महसुस होता है कि आज भी भगवान जीवित है । शांत व एकान्त वातावरण को देखे हुए हमारी आत्मा भी उस ओर खींची जाती है, स्वयं हमको शांति का अनुभव होता है और आध्यात्मिक भावना जागृत होती है। ऐसा भी महसुस होता है कि काश हम यहां आकर साधना कर सके, यह भूमि साधना की ओर भी प्रेरित करती है।

मंदिर के सभामंडप में दो प्रतिमाएं श्री पार्श्वनाथ भगवान की काउसंग्ग मुद्रा में विराजित है जो बहुत ही आकर्षित लगती है यही पर एक देवरी में शांतिनाथ भगवान की आकर्षक प्रतिमा विराजित है जो पूर्व में कालाबोरा गांव में स्थापित कर यहां पर बिराजमान कराई । काला बोरा जो आजकल, काला डेरा के नाम से जाना जाता है। यहां पर यशोभद्रसूरिजी के शिष्य श्री विजयजी महाराजसा. व देवसमण विजय जी महाराज ने दो माह रूक कर साधना की थी ये बावण जिनालय का मंदिर है।

इस तीर्थ के बारे में कहावत भी है कि नाणा, नियाणा, मांडिया जीवित स्वामी को वंदना की। यह तीर्थ मारवाड़ की पंचतीर्थी कहलाती है। मंदिर के कुछ दूरी पर श्री गोगाजी (भेरूजी की प्रतिमा स्थापित है जो चमत्कारी व प्रभावशाली है, ये तीर्थ के रक्षक कहलाते हैं। इस तीर्थ की देखरेख कल्याणजी परमानन्द जी की पेढ़ी द्वारा की जाती है। स्थानीय स्थल पर पूजारी एवं अन्य कर्मचारी द्वारा की जाती है। यहां धर्मशाला व भोजनशाला संचालित है । भोजन की व्यवस्था सूचना देने पर ही होती है।

उज्जैन भैरूगढ़ जिनालय में स्थापित जैन रत्न महान सम्राट,
40 करोड़ जैनों के महाराजा

श्री संप्रति महाराजा की अप्रितम प्रतिमा